रजि. नं. पी.बी./जे.एल–/0011/2012-14 RNI No. 26281/74

कृण्वन्तो ओ३म् विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

वर्ष–74, अंक : 18, 27-30 जुलाई 2017 तदनुसार 15 श्रावण सम्वत् 2074 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

दीर्घ जीवन का उपाय

-ले० स्वामी वेदानन्द (दयानन्द) तीर्थ

जीवतां ज्योतिरभ्येह्यर्वाङ् त्वा हरामि शतशारदाय।

अवमुञ्चन्मृत्युपाशानशस्तिं द्राघीय आयुः प्रतरं ते दधामि।।

-अथर्व० ८।२।२

शब्दार्थ-जीवताम् = जीवितों के **ज्योतिः** = प्रकाश को **अर्वाङ्** = सामने होकर **अभि आ इहि** = उद्योग से प्राप्त कर। मैं **त्वा** = तुझको **शत-शारदाय** = सौ वर्ष के जीवन के लिए **आ + हरामि** = चलाता हूँ। **अशस्तिम्** = अप्रशस्तता, गन्दगीरूप **मृत्युपाशान्** = मौत के फन्दों को **अवमुञ्चन्** = दूर कराता हुआ **ते** = तुझे **प्रतरम्** = बहुत बड़ी **द्राघीयः** = लम्बी **आयुः** = आयु **दधामि** = देता हूँ।

व्याख्या-मनुष्य की साधारण जीवन-अवधि सौ वर्ष की है, जैसा कि यजुर्वेद [४०।२] में कहा गया है-**'जिजीविषेच्छतं समाः'** [मनुष्य सौ वर्ष जीने की इच्छा करे] प्रकृत मन्त्र में भी भगवान् ने कहा है-**'आ त्वा हरामि शतशारदाय'** = तुझे इस संसार में सौ वर्षों के जीवन के लिए लाया हूँ। जैसे जलते दीपक से दूसरे दीपक जलाये जा सकते हैं, ऐसे ही जीते-जागतों से जीवन-ज्योति मिल सकती है। इसी भाव से कहा है-**'जीवतां ज्योतिरभ्येहि'** = जीते-जागतों से जीवन-प्रकाश ले, अर्थात् दीर्घजीवी लोगों के पास उठो, बैठो, उनकी दिनचर्या का निरीक्षण करो कि कैसे उन्हें दीर्घ जीवन मिला। जैसी सङ्गति होती है, प्रायः वैसे ही आचार-विचार बनते हैं, अतः दीर्घजीवन के अभिलाषियों को दीर्घजीवियों का सङ्ग करना अतीव उपयुक्त है। इसी प्रकार मरों का चिन्तन छोड़ देना चाहिए। जो मर गये, सो गये। इस रूप में वे आने के नहीं। उनको पुनः-पुनः स्मरण करने से मरण के संस्कार ही पुष्ट होंगे। अतः वेद कहता है-**'मा गतानामा दीधीथा ये नयन्ति परावतम्।'** [अ० ८।१।८] मरों का चिन्तन मत कर, वे जीवन से परे ले-जाते हैं। प्रत्युत **'आ रोह तमसो ज्योतिः'** [अ० ८।१।८] = मृतक चिन्तनरूप अन्धकार से ऊपर उठकर जीवन-ज्योति प्राप्त कर।

जीवन के विघ्नों का नाम मृत्यु या मृत्युपाश है। दीर्घ जीवन के अभिलाषी को इन मृत्युपाशों को काटना होगा। वेद कहता है-**'अवमुञ्चन् मृत्युपाशानशस्तिम्'** = अर्थात् अशस्ति = गन्दगी, दुराचाररूप मृत्युपाशों को छोड़।

समस्त अशस्त = निन्दित आचार, यथा व्यभिचारादि, युक्त आहार-विहार का अभाव जीवन को घटाने वाले हैं। ये मृत्यु को समीप लाने वाले हैं, अतः इनका त्याग ही करना चाहिए। अशस्ति के विपरीत ब्रह्मचर्य = परमात्मा के आदेशानुसार आचार, मौत को मारने का प्रबल हथियार है। जैसा कहा है-**'ब्रह्मचर्य्येण तपसा देवा मृत्युमपाघ्नत'** (अ० ११।५।१९) = ब्रह्मचर्यरूपी तप के द्वारा विद्वान् मृत्यु को मार भगाते हैं। ब्रह्मचर्य से दीर्घजीवन मिलता है, जैसा कि वेद में आदेश है-**'यां त्वा पूर्वे भूतकृत ऋषयः परिबेधिरे। सा त्वं परि ष्वजस्व मां दीर्घायुत्वाय मेखले।।'** [अ० ६।१३३।५]-हे मेखले [कौपीन] ! जिस तुझको सत्यकारी पूर्ण ऋषि बाँधते हैं, वह तू मुझे दीर्घ जीवन के लिए आलिंगन कर। मेखला ब्रह्मचर्य का बाह्य चिन्ह है। दीर्घ जीवन-अभिलाषी को ब्रह्मचर्य धारण करना चाहिए और उसके साधनों मेखलाबन्धन-आदि में कभी प्रसाद न करना चाहिए। **(स्वाध्याय संदोह से साभार)**

वैदिक भारत-कौशल भारत

आर्य महासम्मेलन 5 नवम्बर को नवांशहर में

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के तत्वावधान में आगामी आर्य महासम्मेलन वैदिक भारत-कौशल भारत **5 नवम्बर 2017** रविवार को नवांशहर में करने का निश्चय किया गया है। इस अवसर पर उच्चकोटि के वैदिक विद्वान् वक्ता, सन्यासी, संगीतज्ञ एवं नेतागण पधारेंगे। कार्यक्रम की विस्तृत सूचना समय-समय पर आपको आर्य मर्यादा साप्ताहिक द्वारा मिलती रहेगी। इसलिए 5 नवम्बर 2017 की तिथि को कोई कार्यक्रम न रखकर पंजाब की सभी आर्य समाजें अधिक से अधिक संख्या में नवांशहर में पहुंच कर अपने संगठन का परिचय दें।

-प्रेम भारद्वाज
महामन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

श्रावणी पर्व क्यों मनाएं

-ले० महात्मा चैतन्यमुनि तहसील सुन्दरनगर, मण्डी (हि०प्र०)

यह एक ध्रुव सत्य है कि आज व्यक्ति भौतिकता बाद में इतना अधिक संलिप्त हो चुका है कि इसे प्राप्त करने के लिए वह विवेक व अविवेक की पहचान भी पूरी तरह से खो चुका है। अनैतिकता का सहारा लेकर व्यक्ति उन सुख-सुविधाओं को जुटाने में लगा हुआ है जिनसे तृप्ति मिलने वाली नहीं है। जो व्यक्ति को तृप्ति तक पहुंचा सकती है उस आध्यात्मिकता को सब भूलते चले जा रहे हैं। शारीरिक आवश्यकताओं की भूख इतनी अधिक बढ़ गई है कि व्यक्ति इससे आगे कुछ भी सोचने के लिए तैयार नहीं है। ये भौतिक प्रसाधन उसे अन्ततः तृप्ति देने वाले नहीं है इस सत्य का भी उसे पग-पग पर आभास होता रहता है मगर मृगतृष्णा रूपी भटकाव में वह निरन्तर भटकता चला जा रहा है। ये सांसारिक भोग उसे हर बार चेतावनी देते हैं कि हम में तुम्हें तृप्त करने की सामर्थ्य नहीं है मगर व्यक्ति बार-बार भोगों में डूबकर और अतृप्त होकर भी वहीं तृप्ति खोज रहा है। जहां वह है ही नहीं। वह इस जीवन रूपी चौराहे पर खाली का खाली खड़ा है..... अतृप्त है..... रो भी रहा है..... तड़प भी रहा है मगर पुनः पुनः भौतिक भोगों की आग में स्वयं को झोंकता भी चला जा रहा है। उसकी स्थिति ठीक इस प्रकार की हो गई है मानों कोई अपनी हथेली पर आग का अंगारा लेकर खड़ा हुआ हो, उसे छोड़ने के लिए भी तैयार नहीं है और उसकी जलन के कारण तड़प भी रहा हो। वह इतना भी ज्ञान नहीं रखता कि जलन देने वाली अग्नि को तो उसने स्वयं ही पकड़ रखा है। इस त्रासदी से आज अधिकतर लोग रूबरू हो रहे हैं। ऐसे ही लोगों को सम्बोधित करते हुए मानों वेद कहता है-

अन्ति सन्तं न जहाति अन्ति सन्तं न पश्यति।

देवस्य पश्य काव्यं न ममार न जीर्यति।। (अथर्व० 10-8-32)

अर्थात् पास बैठे हुए को छोड़ता नहीं, पास बैठे हुए को देखता नहीं। अरे उस परम पिता परमात्मा के काव्य वेद को देख जो न कभी मरता है और न कभी पुराना होता है।

इस मन्त्र के भावों का यदि हम गहराई से मनन करें तो हमारे जीवन का कांटा ही बदल सकता है। संक्षिप्तता से इसका भाव हम इस प्रकार समझ सकते हैं कि परमात्मा के काव्य अर्थात् प्रकृति और वेद ज्ञान के सम्यक अध्ययन से हम इस तथ्य को जान लें कि इस प्रकृति में सुख तो है मगर आनन्द नहीं है। यदि वास्तविक आनन्द का पान करना है तो शारीरिक एवं भौतिक सृष्टि में उसकी तलाश छोड़कर उसे आध्यात्मिकता में खोजना होगा। आत्मा को उसकी वास्तविक खुराक मिलने पर ही तृप्ति मिल सकती है। इसलिए वेद मन्त्र हमें चेतावनी देते हुए कह रहा है कि यदि तुम सुख और आनन्द चाहते हो तो परमात्मा के शाश्वत नियमों का अवलोकन करके आत्मा रूपी रथी के इस रथ को परमात्मा की ओर मोड़ना होगा। परमात्मा के सान्निध्य में जाकर ही तुझे परम शान्ति और तृप्ति मिल सकती है।

हमारा वेद सप्ताह मनाने का उद्देश्य भी यही होना चाहिए कि हम जीवन की पगडण्डी पर चलते-चलते अचानक जिन झाड़-झंखाड़ों में उलझ गए हैं उससे निकलने के लिए वेद ज्ञान को व्यवहारिकता में लाएं। आज समाज, राष्ट्र और समूचा विश्व आतंक और भय के वातावरण से गुजर रहा है। कुछ वर्ष पूर्व जो सौहार्द और प्रेम का वातावरण था वह लुप्तप्राय ही हो गया है। मानव इतना हृदयहीन हो गया है कि जहां उसे दूसरों का उपकार करने से प्रसन्नता होती थी आज वह अपकार करके प्रसन्न होने लगा है। अलगाववाद, मज़हबवाद, जाति-वाद, क्षेत्रवाद और सम्प्रदायवाद के काले बादल हमारे चारों ओर मंडरा रहे हैं। कब किसके घर पर बिजली गिर जाए कुछ पता नहीं। इन समस्याओं का समाधान खोजा तो जा रहा है मगर स्थिति यह है कि मरज बढ़ता गया ज्यों-ज्यों दवा की। हम अपने ही देश को लें। यहां पर प्रत्येक नेता या दल अपनी-अपनी वोट की राजनीति खेल रहा है, राष्ट्र के सामूहिक विकास की किसी को चिन्ता नहीं है। तुष्टिकरण और वोट की राजनीति ने ऐसी दीवारें खड़ी कर दी है जो दिन-प्रतिदिन और भी अधिक ऊँची होती चली जा रही है। चाहे व्यक्तिगत हों, परिवार और समाज तथा देश की हो सभी समस्याओं का समाधान हमें वेद में मिल सकता है क्योंकि वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। सत्य एक ऐसी रामबाण औषधि है जिससे सभी रोग समाप्त हो सकते हैं। वेद हमें सत्य की कसौटी पर रहकर जीना सिखाता है। हमारे साथ समस्या यही है कि हमने झूठ का सहारा ले रखा है तथा एक झूठ को सही ठहराने के लिए हम एक और झूठ का सहारा ले रहे हैं। इस प्रकार इन झूठों के अम्बार तले हम दब गए हैं। हमें इस बात को गांठ बान्ध लेना चाहिए कि झूठ के सहारे हमारा किसी भी क्षेत्र में उत्थान नहीं हो सकता है। यह ठीक है कि जैसे रोगी को कड़वी दवाई खाने में तो अच्छी नहीं लगती है मगर उसका परिणाम सुखद होता है, ठीक इसी प्रकार वेद के सत्य पर चलना हमें पहले तो बहुत अटपटा और अव्यव-हारिक लग सकता है क्योंकि हमें अपने-अपने स्वार्थ के दायरों में सिमट कर जीने की आदत पड़ गई है मगर वास्तविकता यह है कि हमें अपने-अपने संकुचित दायरों से बाहर निकलकर सत्यता को स्वीकार करना होगा क्योंकि सत्य की सोच ही अन्ततः ठीक होती है। वेद हमें सत्य के साथ जुड़ने की ही प्रेरणा देता है।

सर्वप्रथम हम इसी बात पर चिन्तन करते है कि मानव-मानव के भीतर ये दूरियां क्यों बढ़ती चली जा रही हैं। होता यह है कि अपने तप, त्याग और साधना से कोई भी व्यक्ति जब उच्चतम स्तरों को छू लेता है तो उसके बहुत से अनुयायी भी बन जाते हैं मगर ये अनुयायी उन आदर्शों पर तो चल नहीं पाते हैं मगर मात्र लकीर के फकीर बन जाते हैं। उस महापुरूष ने जिस तप और त्याग से जीवन की ऊँचाईयों को छूआ था उस प्रक्रिया को नजर अन्दाज करके उस महापुरूष की ही पूजा-अर्चना शुरू कर दी जाती है। आज हमारे समाज में ऐसे पैगम्बरों, अवतारों और गुरूओं की मानों बाढ़ सी आ गई है। गुरू होना तो बुरी बात नहीं मगर गुरूडम प्रथा ने इस समाज का बहुत अहित किया है। इससे मानवीय एकता को बहुत बड़ा धक्का लगा है तथा परमात्मा के स्थान पर व्यक्तियों की पूजा होने लगी है। इस व्यक्ति पूजा ने अन्य अनेक प्रकार की कुरीतियों को भी जन्म दिया है। इसी के आधार पर व्यक्तियों द्वारा बनाए गए अलग-अलग ग्रन्थों और उपदेशों को प्रमाण मानने की अज्ञानता का भी जन्म हुआ है। अलग-अलग नामों और पूजा पद्धतियों ने एक मानव धर्म को अनेक सम्प्रदायों में बांट दिया है। यह एक अटल सत्य है कि कोई भी महापुरूष परमात्मा नहीं बन सकता है और अल्प ज्ञानी होने के कारण न ही उसके द्वारा दिया गया ज्ञान निर्भ्रान्त और पूर्णता सत्य हो सकता है। मगर आज जैसे मानों अन्धे ही अन्धों को रास्ता दिखा रहे है इसलिए अज्ञानता के गढ्ढे में गिरकर चतुर्दिक विनाश हो रहा है। तथाकथित इन भगवानों की भीड़ में परमात्मा कहीं खो गया लगता है और मत-मज़हब एवं सम्प्रदायों की अज्ञानता में मानवीय गुणों का ह्रास हुआ है। एक सामूहिक सोच जिससे हमारी चतुर्दिक उन्नति का मार्ग प्रशस्त होना था, विलुप्त हो गई है।

आज इस बात की परम आवश्-यकता है कि मानव मूल्यों की पुनः स्थापना करने के लिए एक सामूहिक सोच का विकास किया जाए जो वेद के आधार पर ही हो सकती है क्योंकि वेद पूर्णता सार्वभौमिक और परमात्मा की सत्य

(शेष पृष्ठ 7 पर)

सम्पादकीय.....

स्वाध्याय का जीवन में महत्त्व

वैदिक धर्म में स्वाध्याय की महिमा पर प्रभूत प्रकाश डाला गया है। हमारे धर्मग्रन्थ वेद, दर्शनशास्त्र, उपनिषदें, रामायण, महाभारत, गीता आदि सभी धार्मिक ग्रन्थ हमारा मार्गदर्शन करते हैं। सबमें एक ही प्रयत्न हुआ है कि मानव को मार्ग प्रदर्शित किया जाए, उसके जीवन को सुखी और समृद्ध बनाया जाए। इसके लिए शास्त्रों में स्वाध्याय की महिमा पर विशेष बल दिया गया है। स्वाध्याय के द्वारा मनुष्य को अपने कर्त्तव्य-अकर्त्तव्य, धर्म-अधर्म, सत्य-असत्य का बोध होता है। इसलिए जिन ग्रन्थों के द्वारा हमारा मार्गदर्शन होता है, अच्छी प्रेरणा मिलती है, ऐसे ग्रन्थों का स्वाध्याय करना हमारा परम कर्त्तव्य है।

स्वाध्याय करने से पूर्व हमें स्वाध्याय शब्द पर विचार करना चाहिए कि स्वाध्याय किसे कहते हैं? स्वाध्याय के दो अर्थ हैं- एक उत्तम ग्रन्थों का अध्ययन, जिससे भौतिक, मानसिक तथा आत्मिक उन्नति हो। स्वाध्याय का दूसरा अर्थ है- अपने आप का अध्ययन। अपने जीवन का अध्ययन कि- मैं कौन हूँ, इस संसार में क्यों आया हूँ, मेरे जीवन का उद्देश्य क्या है? धर्म और सत्य का मार्ग कौन सा है? इस मनुष्य जीवन को कैसे सार्थक बनाना है? यह सब ज्ञान मनुष्य को उच्चकोटि के ग्रन्थों के स्वाध्याय से होता है। इसलिए शास्त्रों में कहा गया है कि-स्वाध्यायान्न मा प्रमदः। स्वाध्याय में कभी भी प्रमाद नहीं करना चाहिए। इसके साथ-साथ मनुष्य को अपनी अच्छाईयों और बुराईयों का चिन्तन करते हुए अपने जीवन के अध्ययन में भी हमेशा प्रयत्नशील रहना चाहिए। मनुष्य का स्वभाव है कि वह सबके अन्दर बुराईयों को देखता है परन्तु अपने अन्दर झांककर देखने का प्रयास नहीं करता। इसलिए अच्छे ग्रन्थों के स्वाध्याय के साथ-साथ अपने जीवन का स्वाध्याय भी करना चाहिए।

आचार्य स्नातक को उपदेश देता हुआ कहता है कि उत्तमोत्तम ग्रन्थों का स्वाध्याय करना और साथ ही अपने भीतर झांककर अपने को भी देखना। इससे तू पथभ्रष्ट नहीं होगा। वेद में कहा गया है-

यः पावमानीरध्येत्यृषिभिः सम्भृतं रसम्।
सर्वं स पूतमश्नाति स्वदितं मातरिश्वना।।

अर्थात् जो पवित्र करने वाली, ईश्वरप्रदत्त और ऋषियों द्वारा संचित ऋचाओं का अध्ययन करता है, वह पवित्र आनन्द रस का पान करता है।

स्वाध्याय जीवन के लिए परमावश्यक है। जिस प्रकार शारीरिक उन्नति के लिए शुद्ध सात्विक आहार आवश्यक है, ठीक उसी प्रकार बौद्धिक एवं आत्मिक उन्नति के लिए उत्तम ग्रन्थों का स्वाध्याय भी आवश्यक और अनिवार्य है। स्वाध्याय से विचारों में पवित्रता आती है और ज्ञान की वृद्धि होती है। जिस प्रकार भोजन की शुद्धता एवं पौष्टिकता से उसके शरीर के स्वास्थ्य का ज्ञान होता है, उसी प्रकार अच्छे विचारों, एवं स्वाध्याय से उसके बौद्धिक स्तर का पता चलता है।

प्राचीन ऋषियों ने भी स्वाध्याय करने पर अत्यधिक बल दिया है। इसे बहुत बडा तप माना गया है। शतपथ ब्राह्मण में कहा गया है कि यदि कोई व्यक्ति सुन्दर एवं कोमलता से युक्त शय्या पर लेटकर भी पवित्र उत्तम ग्रन्थों का स्वाध्याय करता है तो भी वह बहुत बडा तप करता है। प्रतिदिन स्वाध्याय करते से मनुष्य के ज्ञान में अत्यधिक वृद्धि होती है। ठीक ही कहा गया है- नास्ति स्वाध्यायसमं चक्षुः अर्थात् स्वाध्याय के समान संसार में कोई सत्य विवेचन करने का चक्षु नहीं। यदि कोई व्यक्ति प्रमाद व आलस्य के कारण स्वाध्याय को त्याग देता है तो उसके लिए कहा गया है कि-विद्याहीना न शोभन्ते निर्गन्धा इव किंशुकाः। विद्या के बिना मनुष्य ऐसे ही होता है जैसे पलाश का फूल। अग्नि जैसे लाल होते हुए भी गन्धरहित होता है। स्वाध्यायशील व्यक्ति की कीर्ति और यश सारे संसार में फैल जाता है। अतः कहा है-विद्वान् सर्वत्र पूज्यते- विद्वान् का स्थान सबसे ऊँचा है, इसकी तुलना किसी से नहीं की जा सकती। यजुर्वेद में कहा है- यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः। ईश्वर आज्ञा देता है कि हे मनुष्यों जिस प्रकार मैं तुम्हें चारों वेदों का उपदेश करता हूँ उसी प्रकार तुम भी उन्हें पढ के सब मनुष्यों को पढ़ाया और सुनाया करो। क्योंकि यह वेदवाणी सबका कल्याण करने वाली है। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने आर्य समाज के तीसरे नियम में वेद को सब सत्य विद्याओं का पुस्तक और उसके पढ़ने-पढाने को परम धर्म बताया है। स्वाध्याय करना भी योग का अंश है। पातंजल योगदर्शन में लिखा है- स्वाध्यायादिष्टदेवतासंप्रयोगः। अर्थात् स्वाध्याय से इष्ट देवता की प्राप्ति होती है। इष्ट देवता ईश्वर का नाम है। उसकी प्राप्ति के लिए योगी स्वाध्याय और ईश्वर का भजन करते हैं। यजुर्वेद में कहा गया है कि-

विद्यां चाविद्यां च यस्तद्वेदोभयं सह।
अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा विद्यया अमृतमश्नुते।।

जो व्यक्ति विद्या अर्थात् अध्यात्मज्ञान तथा अविद्या अर्थात् भौतिक ज्ञान को, इन दोनों को एक साथ जानता है, वह अविद्या अर्थात् भौतिक विज्ञान से मृत्यु लाने वाले प्रवाह को जन्म मरण आदि के क्लेशों से भरे संसार को पार करके, विद्या अर्थात् अध्यात्मज्ञान के द्वारा मोक्ष को पा लेता है।

स्वाध्याय के बल पर एक साधारण व्यक्ति भी महान् बन सकता है। इसलिए मनुष्य को जीवन पवित्र करने वाले, आत्मा को ऊँचा उठाने वाले ग्रन्थों का स्वाध्याय करना चाहिए। इसलिए आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने आर्ष ग्रन्थों के स्वाध्याय पर बल दिया। महर्षि दयानन्द के अनुसार- आर्षग्रन्थों का पढ़ना ऐसा है कि जैसा एक गोता लगाना और बहुमूल्य मोतियों का पाना। अनार्ष ग्रन्थों के स्वाध्याय से मनुष्य की मानसिकता संकीर्ण हो जाती है। वह संकीर्ण मानसिकता का शिकार होकर मत, मजहब और सम्प्रदाय के जाल में फंस जाता है। इसीलिए वेदों का स्वाध्याय सर्वोत्तम है। वेद का ज्ञान सम्पूर्ण प्राणीमात्र के लिए है। इसीलिए मनुष्य को वेदों और महर्षि दयानन्द कृत सत्यार्थप्रकाश आदि उत्तम ग्रन्थों का स्वाध्याय करना चाहिए।

श्रावणी के इस काल में सभी मनुष्यों को वेद के स्वाध्याय का संकल्प करना चाहिए। स्वाध्याय के बल पर मूर्ख भी विद्वान् बन जाता है। स्वाध्याय और दृढ़ संकल्प के कारण मूर्ख कालिदास उच्चकोटि का महाकवि बन गया। प्रतिदिन स्वाध्याय सत्संग एवं ईश्वर की उपासना से मनुष्य क्रियाशील व महान् बनता है। इसलिए श्रावणी के पर्व पर मनुष्य को स्वाध्याय का संकल्प करके अपने जीवन का नवनिर्माण करना चाहिए। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब से सम्बन्धित सभी आर्य समाजें इस अवसर पर वेद प्रचार सप्ताह का आयोजन करके लोगों को यज्ञ और वैदिक संस्कृति के साथ जोडने का प्रयास करें। लोगों को वैदिक साहित्य भेंट करके स्वाध्याय करने की प्रेरणा करें।

प्रेम भारद्वाज
संपादक एवं सभा महामन्त्री

युग की पुकार

सत्यार्थ प्रकाश ग्रन्थ का घर घर हो प्रचार

-पं० उम्मेद सिंह विशारद वैदिक प्रचारक गढ़निवास मोहकमपुर देहरादून

आर्य समाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के जीवन चरित्र को जिस किसी ने समझा, और उनके सम्पर्क में आया उस पर चिरस्थायी प्रभाव पड़ा। सहस्त्रों मनुष्यों के जीवन तो उन्होंने अपने जीवन काल में ही बदल डाले। उनका भौतिक शरीर आज भले ही हमारे बीच विद्यमान न हो परन्तु उनके विचार सृष्टि पर्यन्त गुजांय मान होते ही रहेंगे।

उन्होंने सत्यार्थ प्रकाश नामक ग्रन्थ की रचना करके मानव जाति का अवर्णनीय उपकार किया हैं। सत्य का ग्रहण और असत्य का परित्याग करना ही इस ग्रन्थ का मुख्य उद्देश्य है, और यही सब सुधारों का मूल भी हैं महर्षि दयानन्द जी ने इस ग्रन्थ की भूमिका में लिखा है कि ''सत्योपदेश'' के बिना अन्य कोई भी मनुष्य जाति की उन्नति का कारण नहीं हैं वह सत्य उपदेश मनुष्यकृत अनार्ष ग्रन्थों में उपलब्ध नहीं होता जिससे मानव का कल्याण हो सके। हितकारी प्रमाणिक एवं महत्वपूर्ण विषयों का सुगमता से प्रतिपादन तो आर्ष ग्रन्थों में ही उपलब्ध होता है।

अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश की भूमिका से

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी सत्यार्थ प्रकाश की भूमिका में लिखते है कि मेरा इस ग्रन्थ को बनाने का प्रयोजन सत्य अर्थ का प्रकाश करना है, अर्थात् जो सत्य है उसको सत्य और जो मिथ्या है उसको मिथ्या ही प्रतिपादन करना, सत्य अर्थ का प्रकाश समझा हैं। वह सत्य नहीं कहाता जो सत्य के स्थान में असत्य और असत्य के स्थान पर सत्य का प्रकाश किया जाए। किन्तु जो जैसा है, उसको वैसा ही कहना, लिखना और मानना सत्य कहाता है। जो मनुष्य पक्षपाती होता है, वह अपने असत्य को भी सत्य और दूसरे विरोधी मत वाले के सत्य को भी असत्य सिद्ध करने में प्रवृत्त रहता है, इसलिए वह सत्य मत को प्राप्त नहीं हो सकता।

इसीलिए विद्वान आप्तों का यही मुख्य काम है कि उपदेश व लेख द्वारा सब मनुष्यों के सामने सत्यासत्य का स्वरूप समर्पित कर देना, पश्चात् मनुष्य लोग स्वयं अपना हिताहित समझ कर सत्यार्थ का ग्रहण और मिथ्यार्थ का परित्याग करके सदा आनन्द में रहें। मनुष्य का आत्मा सत्यासत्य का जानने हारा है, तथापि अपने प्रयोजन हठ दुराग्रह और अविद्या आदि दोषों से सत्य को छोड़ असत्य पर झुका जाता है।

इस ग्रन्थ में ऐसी बात नहीं रखी और न किसी का मन दुखाना व किसी की हानि का तात्पर्य है। किन्तु जिससे मनुष्य जाति की उन्नति और उपकार हो सत्यासत्य को मनुष्य लोग जान कर सत्य का ग्रहण और असत्य का परित्याग करें। अन्य कोई भी मनुष्य जाति की उन्नति का कारण नहीं है बिना सत्योपदेश के।

प्रत्येक मत के विद्वान पक्षपात छोड़ कर सर्वतन्त्र सिद्धान्त बर्ते-बतावें

यद्यपि आजकल बहुत से विद्वान प्रत्येक मतों में है वे पक्षपात छोड़ कर सर्वतन्त्र सिद्धान्त अर्थात् जो-जो बातें सबके अनुकूल सब में सत्य हैं, उनका ग्रहण और जो एक दूसरे के विरूद्ध बातें है उनका त्याग कर परस्पर प्रति में बर्ते-बतावें तो जगत का पूर्ण हित होवे, क्योंकि विद्वानों के विरोध से अविद्वानों में विरोध बढ़कर अनेक विधि दुःख की वृद्धि और सुख की हानि होती है। इस हानि ने जो कि स्वार्थी मनुष्यों को प्रिय है, सब मनुष्यों को दुःख सागर में डूबो दिया है। इनमें से जो कोई सार्वजनिक हित लक्ष्य में धर प्रवृत्त होता है उससे स्वार्थी लोग विरोध करने में तत्पर होकर अनेक प्रकार विघ्न करते हैं।

सत्यमेव जयते नानृतं सत्येन पन्था विततो देवयानः अर्थात् सर्वदा सत्य का विजय और असत्य का पराजय और सत्य से ही विद्वानों का मार्ग विस्तृत होता है। इस दृढ़ निश्चय के आलम्ब से आप्त लोग परोपकार करने से उदासीन होकर कभी नहीं सत्यार्थ प्रकाश करने से हटते।

महर्षि दयानन्द जी लिखते हैं यद्यपि मैं आर्यावर्त्त देश से उत्पन्न और बसता हूँ, तथापि इस देश के मतमतान्तर की झूठी बातों का पक्षपात न कर यथातथ्य प्रकाश करता हूँ, वैसे ही दूसरे देश व मत वालों के साथ भी वैसा ही वर्त्ताता हूँ। जैसा स्वदेश वालों के साथ मनुष्योन्नति के विषय में वर्त्तता हूँ। वैसा विदेशियों के साथ भी, ताकि सब सज्जनों को भी वर्त्तना योग्य हैं क्योंकि मैं भी जो किसी एक का पक्षपाती होता तो जैसे आजकल के स्वमत की स्तुति, मण्डन और प्रचार करते और दूसरे मत की निन्दा हानि और बन्ध करने में तत्पर होते है वैसे मैं भी होता, परन्तु ऐसी बातें मनुष्यपन में बहिः है।

यह ग्रन्थ चौदह समुल्लास अर्थात् चौदह विभागों में रचित हुआ है। आत्म ज्ञान हेतु पढ़ें

1. प्रथम सम्मुल्लास में ईश्वर के ओकांराआदि नामों की व्याख्या

2. द्वितीय सम्मुलास में सन्तानों की शिक्षा।

3. तृतीय सम्मुलास में ब्रह्मचर्य, पठन-पाठन व्यवस्था, सत्यासत्य ग्रन्थों के नाम और पढ़ने-पढ़ाने की रीति।

4. चतुर्थ सम्मुलास में विवाह और ग्रहाश्रम का व्यवहार।

5. पंच्चम सम्मुलास में वानप्रस्थ और संन्यासाश्रम की विधि।

6. छठे सम्मुलास में राजधर्म।

7. सप्तम सम्मुलास में वेदेश्वर विषय।

8. अष्टम सम्मुलास में जगत की उत्पत्ति, स्थिति, प्रलय।

9. नवम सम्मुलास में विद्या, अविद्या, बन्ध और मोक्ष की व्याख्या।

10. दशवे सम्मुलास में आचार, अनाचार, भक्ष्या भक्ष विषय।

11. एकादश सम्मुलास में आर्य्यावर्त्तीय मतमतान्तर के खण्डन मन्डन विषय।

12. द्वादश सम्मुलास में चारवाक, बौद्ध और जैन मत का विषय।

13. त्रयोदश सम्मुलास में ईसाई मत का विषय।

14. चौदहवें सम्मुलास में मुसलमानों के मत का विषय। और चौहद सम्मुलास के अन्त में आर्यों के सनातन वेदविहित मत की विशेषतः व्याख्या लिखी है, जिसको मैं भी यथावत मानता हूँ।

सम्पूर्ण मानव जगत से आत्म निवेदन

वेद ईश्वर की वाणी है और वेद सृष्टि का संविधान है। वैदिक धर्म व संस्कारों पर चलना ही सच्ची ईश्वर भक्ति व जीवन में सुख शान्ति का मार्ग हैं महर्षि दयानन्द जी द्वारा रचित सत्यार्थ प्रकाश ग्रन्थ को जीवन का सुख पाने के लिये श्रद्धा व जिज्ञासा से अवश्य पढ़े। आपके विचारों में सत्य के क्रान्तिकारी विचार उत्पन्न होगें आज के मानव जगत में विषैले वातावरण में, आज के युग की यही प्रकार है कि सत्यार्थ प्रकाश ग्रन्थ का घर घर हो प्रचार। ग्रन्थ की प्राप्ति का स्थान आर्य समाज मन्दिर व बुक सेलरों से भी प्राप्त हो सकता है।

महर्षि दयानंद सरस्वती ने डाली थी स्वतंत्रता संग्राम की नींव

-ले० विवेक प्रिय आर्य, 52 ताराधाम कॉलोनी (मथुरा)

महर्षि दयानंद सरस्वती ने राष्ट्रवादी विचारधारा को आगे बढ़ाने में उल्लेखनीय योगदान दिया। उनके द्वारा स्थापित आर्यसमाज शिक्षा, समाज-सुधार एवं राष्ट्रीयता का आन्दोलन था। स्वतंत्रता पूर्व काल में हिंदू समाज के नवजागरण और पुनरुत्थान आंदोलन के रूप में भी आर्यसमाज सर्वाधिक शक्तिशाली आवाज था। यह पूरे पश्चिम और उत्तर भारत में सक्रिय था तथा सुप्त हिन्दू जाति को जागृत करने में संलग्न था। दुनिया में आर्यसमाज एकमात्र ऐसा संगठन है, जिसके द्वारा धर्म, समाज और राष्ट्र तीनों के लिए अभूतपूर्व कार्य किए गए हैं। आर्यसमाज किसी मत, मजहब व पंथ का नाम नहीं है, जबकि आर्यसमाज एक सुधार, एक आन्दोलन का नाम है। आर्य समाज के अनुयायियों ने भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में बढ़-चढ़ कर भाग लिया। भारत के 85 प्रतिशत स्वतंत्रता संग्राम सेनानी आर्य समाज ने पैदा किये थे। स्वदेशी आन्दोलन का मूल सूत्रधार ही आर्य समाज था। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के भीतर भी आर्य समाज के प्रभाव से ही स्वदेशी आन्दोलन आरम्भ हुआ था। महर्षि दयानंद सरस्वती आधुनिक भारत के धार्मिक नेताओं में प्रथम महापुरूष थे, जिन्होंने स्वराज्य शब्द का प्रयोग किया। स्वामी जी ने धर्म परिवर्तन कर चुके लोगों को पुन: अपने वैदिक धर्म में वापिसी के लिए प्रेरणा देकर शुद्धि आंदोलन चलाया था। आर्य समाजियों ने सबसे बड़ा काम जाति व्यवस्था को तोड़ने और सभी हिन्दुओं में समानता का भाव जागृत करने का किया। भारतीयों में भारतीयता को अपनाने, प्राचीन संस्कृति को मौलिक रूप में स्वीकार करने, पश्चिमी प्रभाव को विशुद्ध भारतीयता यानी वेदों की ओर लौटो के नारे के साथ समाप्त करने तथा सभी भारतीयों को एकताबद्ध करने के लिए प्रेरित करने का काम आर्यसमाज ने किया। आर्यसमाज मानव मात्र की उन्नति करने वाला संगठन है, जिसका उद्देश्य शारीरिक, आत्मिक व सामाजिक उन्नति करना है। वह अपनी ही उन्नति से संतुष्ट न रहकर सबकी उन्नति में अपनी उन्नति मानता है।

भारत को आजाद कराने में महर्षि दयानन्द सरस्वती को प्रथम पुरोधा कहा गया। उनके द्वारा ही सन् 1857 में भारत के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम की नींव डाली गयी थी और अंग्रेज शासन के विरुद्ध जनजागरण प्रारम्भ कर दिया था। सन् 57 की क्रांति के विफल हो जाने पर महर्षि दयानन्द ने तात्कालिक परिस्थिति के अनुसार अपना मार्ग बदलकर भाषण और लेखन द्वारा सर्वविध क्रान्ति प्रारम्भ की। महर्षि दयानन्द ही वह पहले भारतीय हैं जिन्होंने अंग्रेजों के साम्राज्य में सर्वप्रथम स्वदेशी राज्य की मांग की थी। वे अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में लिखते हैं- ''कोई कितना ही करे जो स्वदेशी राज्य होता है वह सर्वोपरि, उत्तम होता है। सन् 1870 में लाहौर में विदेशी कपड़ों की होली जलाई। स्टाम्प ड्यूटी व नमक के विरुद्ध आन्दोलन छेड़ा परिणाम स्वरूप आर्य समाज के अनेक कार्यकर्ता व नेता स्वतन्त्रता संग्राम में देश को आजाद करवाने के लिए कूद पड़े। सन् 1857 के पश्चात की क्रांति के जन्मदाता महर्षि दयानन्द सरस्वती और उनके शिष्य पं. श्याम जी कृष्ण वर्मा (जो क्रांति-कारियों के गुरु थे), प्रसिद्ध क्रांति-कारी विनायक दामोदर सावरकर, लाला हरदयाल, भाई परमानन्द, सेनापति बापट, मदनलाल ढींगरा, रामप्रसाद बिस्मिल, गोपालकृष्ण गोखले, सरदार भगत सिंह इत्यादि शिष्यों ने स्वाधीनता आन्दोलन में कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा। इंग्लैण्ड में भारत के लिए जितनी क्रांति हुई वह श्याम जी कृष्ण वर्मा के ''इण्डिया हाउस'' से ही हुई। सरदार भगत सिंह तो जन्म से ही आर्य समाजी थे। इनके दादा सरदार अर्जुन सिंह विशुद्ध आर्य समाजी थे और इनके पिता श्री किशन सिंह भी आर्य समाजी थे। गांधी जी जब अफ्रीका से लौटकर भारत आये तब उनको ठहराने का किसी में साहस न था। तब आर्य समाजी नेता स्वामी श्रद्धानंद ने ही उनको गुरुकुल कांगड़ी में ठहराया था और गांधी जी को महात्मा गांधी की उपाधि से सुशोभित भी स्वामी श्रद्धानंद जी ने ही किया था। स्वतंत्रता प्राप्ति से पूर्व लगभग सभी स्थानों में ऐसी स्थिति थी कि कांग्रेस के प्रमुख कार्यकर्ताओं को यदि कहीं आश्रय, भोजन, निवास आदि मिलता था, तो वह किसी आर्य के घर में ही मिलता था। जब-जब सनातन धर्म पर कोई आक्षेप लगाए गये, महापुरुषों पर किसी ने कीचड़ उछाला तो ऐसे लोगों को आर्य समाज ने ही जवाब देकर चुप किया है। हैदराबाद निजाम ने सांप्रदायिक कट्टरता के कारण हिन्दू मान्यताओं पर 16 प्रतिबंध लगाए थे जिनमें धार्मिक, पारिवारिक, समाजिक रीतिरिवाज सम्मिलित थे। सन् 1937 में पंद्रह हजार से अधिक आर्य समाजी जेल गए और तीव्र आंदोलन किया, कई शहीद हो गए। निजाम ने घबराकर सारी पाबन्दियाँ हटा लीं, जिन व्यक्तियों ने आर्य समाज के द्वारा चलाये आंदोलन में भाग लिया, कारागार गए उन्हें भारत शासन द्वारा स्वतन्त्रता संग्राम सेनानियों की भांति सम्मान देकर पेंशन दी जा रही है। अमृतसर (पंजाब) में कांग्रेस का अधिवेशन करवाने का साहस अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द जी में ही था। उस समय की स्थिति को देखकर किसी भी कांग्रेसी में इतना साहस न था जो सम्मुख आता और कांग्रेस का अधिवेशन करवा सकता। पंजाब केसरी लाला लाजपत राय प्रसिद्ध आर्य समाजी नेता थे उनकी देशभक्ति किसी से तिरोहित नहीं। सन् 1983 में दक्षिण भारत मीनाक्षी-पुरम में पूरे गाँव को मुस्लिम बना दिया गया था। सम्पूर्ण भारत से आर्यसमाज के द्वारा आंदोलन किया गया और वहाँ जाकर हजारों आर्य समाजियों ने शुद्धि हेतु प्रयास किया और पुन: सनातन धर्म में सभी को दीक्षित किया, मंदिर की पुन: स्थापना की। कश्मीर में जब हिंदुओं के मंदिर तोड़ना प्रारम्भ हुआ तो उनकी ओर से आर्य समाज ने प्रयास किया और शासन से 10 करोड़ का मुआवजा दिलवाया। स्वंतन्त्रता आंदोलनकारियों के सर्वेक्षण के अनुसार स्वंतन्त्रता के लिए 80-85 प्रतिशत व्यक्ति आर्य समाज के माध्यम से आए थे। इसी बात को कॉंग्रेस के इतिहास-कार डॉ. पट्टाभि सीतारमैया ने भी लिखा है।

श्रावणी पर्व

हर वर्ष की भान्ति इस वर्ष भी आर्य समाज मंदिर मंडी हिमाचल प्रदेश का श्रावणी पर्व (वेद सप्ताह) का आयोजन 9 अगस्त से 13 अगस्त 2017 तक बड़ी धूमधाम से मनाया जा रहा है। इस अवसर पर प्रख्यात वेद प्रवक्ता डा. ओम व्रत आचार्य वेद ज्ञान प्रवाहित करेंगे और भजनोपदेशक श्री अमरेश आर्य जी के मधुर भजन होंगे। 13 अगस्त को मुख्य समारोह प्रात: 9.00 बजे से दोपहर 12.00 बजे तक मनाया जायेगा।

नवनिर्मित यज्ञशाला का उद्घाटन समारोह

आर्य समाज मंदिर पुतलीघर गली नवप्रीत हस्पताल अमृतसर की नव निर्मित यज्ञशाला का उद्घाटन समारोह रविवार 30 जुलाई 2017 को सायं 4.00 बजे किया जा रहा है। इस अवसर पर श्रद्धेय पंडित सत्यपाल जी पथिक मुख्य अतिथि होंगे। इस यज्ञशाला के निर्माण के लिये माता श्रीमती जगदीश आर्य जी का सहयोग सराहनीय है। इसलिये सभी धर्म प्रेमी सज्जनों से निवेदन है कि इस अवसर पर पधारने का कष्ट करें।

-इन्द्रजीत ठुकराल

चिंतन, मनन ही मन का कार्य

-ले० डॉ. अशोक आर्य १०४ शिप्रा अपार्टमेन्ट, कौशाम्बी २०१०१० गाजियाबाद

मानव का मन ही उसके सब क्रिया कलापों का आधार है। शुद्ध व पवित्र मन से सब कार्य उत्तम होते हैं तथा जिसका मन अशुद्ध होता है, जिसका मन अपवित्र होता है उसके कार्य भी अशुद्ध व अपवित्र ही होते हैं। मानव का मुख्य उद्देश्य भगवद प्राप्ति है, जो शुद्ध मन से ही संभव है। सब प्रकार के ज्ञान प्राप्ति का स्रोत भी शुद्ध मन ही होता है। मानव में विवेक की जागृति का आधार भी मन की शुद्धता ही होती है। यह शुद्ध मन ही होता है, जिससे शुद्ध कार्य होता है तथा उसके द्वारा किये जा रहे शुद्ध कार्यों के कारण उसकी मित्र मंडली में उत्तामोत्तम लोग जुड़ते चले जाते हैं। यह सब मित्र ही उसकी ख्याति, उसकी कीर्ति, उसके यश को सर्वत्र पहुँचाने का कारण होते हैं। अथर्ववेद के प्रस्तुत मन्त्र में इस विषय पर ही चर्चा की गयी है।

मनसा सं कल्पयति, तद देवां अपि गच्छति।

अथो ह ब्राह्मणों वशाम, उप्र-यान्ति याचितुम।।

मन से ही मनुष्य संकल्प करता है। वह मन देवों अर्थात् ज्ञानेन्द्रियों तक जाता है। इसलिए विद्वान लोग बुद्धि को माँगने के लिए देवों अर्थात् गुरु के पास जाते हैं।

इस मन्त्र में बताया गया है कि मन का मुख्य कार्य मनन है, चिंतन है, सोच-विचार है। जब मानव अपना कार्य पूर्ण चिंतन से, पूर्ण मनन से, पूर्ण रूपेण सोच, विचार कर करता है तो उसे सब प्रकार की सफलताएं, सब प्रकार के सुखों की प्राप्ति होती है। इन सुखों को पाकर मनुष्य की प्रसन्नता में वृद्धि होती है तथा उसकी आयु भी लम्बी होती है। यह मनन व चिंतन मन का केवल कार्य ही नहीं है अपितु मन का धर्म भी है। जब हम कहते हैं कि यह तो हमारा कार्य था जो हम ने किया किन्तु कार्य में मानव कई बार उदासीन होकर उसे छोड़ भी बैठता है। इसलिए मन्त्र कहता है कि यह मन का केवल कार्य ही नहीं धर्म भी है तो यह निश्चित हो जाता है कि धर्म होने के कारण मन के लिए अपनी प्रत्येक गतिविधि को आरम्भ करने से पूर्व उस पर मनन चिंतन आवश्यक भी होती है।

मनन चिंतन पूर्वक जो भी कार्य किया जाता है, उसकी सफलता में कुछ भी संदेह नहीं रह जाता। मनन चिंतन से उस कार्य में जो भी नयूनतायें दिखाई देती हैं, उन सब का निवारण कर, उन्हें दूर कर लिया जाता है। इस प्रकार सब गतिविधियों व सब तरह की व्यव-स्थाओं को परिमार्जित कर उन्हें शीशे की भान्ति साफ़ बना कर उससे जो भी कार्य लिया जाता है, उसकी सफलता में कुछ भी संदेह शेष नहीं रह पाता। परिणाम स्वरूप प्रत्येक कार्य में सफलता निश्चित हो जाती है। अत: मन के प्रत्येक कार्य को करने से पूर्व उसके मनन व चिंतन रूपी धर्म का पालन अवश्य ही करना चाहिए अन्यथा इस की सफलता में, इस के सुचारू रूपेण पूर्ति में संदेह ही होता है।

मन के कार्यों को संचालन के लिए जब धर्म को स्वीकार कर लिया गया है तो यह भी निश्चित है कि इस के संचालन का भी तो कोई साधन होगा ही। इस विषय पर विचार करने से पता चलता है कि इसके संचालन के लिए ज्ञानेन्द्रियाँ ही प्रमुख भूमिका निभाती है। ज्ञानेन्द्रियों को मन का भोजन भी कहा जा सकता है। जब तक किसी कार्य को करने सम्बन्धी ज्ञान ही नहीं होगा तब तक उस कार्य की सम्पन्नता में, सफलता पूर्वक पूर्ति में संदेह ही बना रहेगा। जब तक मानव की क्षुधा ही शांत न होगी तब तक वह कोई भी कार्य करने को तैयार नहीं होता। अत: मन का भोजन ज्ञान है, जिसे पा कर ही वह उस कार्य को करने को अग्रसर होता है। इसलिए ज्ञानेन्द्रियों को मन का भोजन कहा है। इन ज्ञानेन्द्रियों से मन दो प्रकार का सहयोग प्राप्त करता है। प्रथम तो ज्ञानेन्द्रियों के सहयोग से मन वह सब सामग्री एकत्रित करता है, जो उस कार्य की सम्पन्नता में सहायक होती है दूसरा इस सामग्री को एकत्र करने के पश्चात प्रस्तुत सामग्री को किस प्रकार संगठित करना है, किस प्रकार जोड़ना है तथा किस प्रकार उस कार्य की सपन्नता के लिए उस सामग्री का प्रयोग करना है, यह सब कुछ भी उसे मन ही बताता है। अत: बिना सोच विचार, चिन्तन, मनन व मार्ग दर्शन के मन कुछ भी नहीं कर पाता, चाहे इस निमित उपयुक्त सामग्री उसने प्राप्त कर ली हो। अत: किसी भी कार्य को संपन्न करने के लिए साधन स्वरूप सामग्री का एकत्र करना तथा उस सामग्री को संगठित कर उस कार्य को पूर्ण करना ज्ञानेन्द्रियों का कार्य है। इसलिए ही मन को प्रत्येक कार्य का धर्म व ज्ञानेन्द्रियों को प्रत्येक कार्य को करने का साधन अथवा भोजन कहा गया है।

इस जगत में परमपिता परमात्मा ने अनेक प्रकार के फल, फूल, नदियाँ नाले, जीव जंतु, स्त्री पुरुष को बनाया है, पैदा किया है, उत्पन्न किया है। इन सब के सम्बन्ध में मन जो कुछ भी देखता व सुनता है, वह सब देखने व सुनने के पश्चात ज्ञानेन्द्रियों के पास जाता है। मन द्वारा कुछ भी निर्णय लेने के लिए जब यह सब सामग्री, सब द्रव्य बुद्धि को दे दिये जाते हैं तो बुद्धि सब को जांच, परख कर जो भी निर्णय लेती है, वह उस निर्णय से मन को अवगत करा देती है तथा आदेश भी देती है कि अब यह कार्य करणीय है। अब मन पुन: ज्ञानेन्द्रियों को अपने निर्णय से अवगत कराते हुए आदेश देता है कि प्रस्तुत कार्य की परख हो चुकी है। यह कार्य उत्तम है, करने योग्य है, इस को तत्काल सम्पन्न किया जावे। इस आदेश के साथ मन ज्ञानेन्द्रियों को यह भी बताता है कि इस कार्य को किस रूप में संपन्न करना है ? इस प्रकार मन अपने प्रत्येक कार्य को संपन्न करने के लिए ज्ञानेन्द्रियों का सहयोग प्राप्त करता है तथा उस कार्य के विकल्प क्या हैं यह सब ज्ञानेन्द्रियों के द्वारा ही निर्धारित किये जाते हैं, प्रस्तुत किये जाते है। अत: ज्ञानेन्द्रियों के सहयोग से ही मन को सब कार्यों को व्यवस्थित कर उनकी दिशा निर्धारित की जाती है तथा इन के द्वारा ही उन्हें सम्पन्न किया जाता है।

इस सब से जो बात स्पष्ट होती है वह यह है कि प्रत्येक कार्य को करने के लिए मन चुन कर उस पर ज्ञानेन्द्रियों मनन व चिन्तन कर अपने सुझावों के साथ मन को लौटा देती हैं। मन उस पर निर्णय लेकर उसे करने के अनुमोदन के साथ पुन: करने का आदेश देते हुए पुन: ज्ञानेन्द्रियों को लौटा देता है तथा ज्ञानेन्द्रियाँ उस आदेश का पालन करते हुए उस कार्य को संपन्न करती है। अत: कोई भी कार्य करने से पूर्व उस पर मनन चिन्तन सुचारू रूप से होता है तब ही वह उत्तम प्रकार से सफल हो पाता है।

पर्यावरण बचाओ, नशा छोड़ो का आयोजन

दयानन्द पब्लिक स्कूल में कक्षा नर्सरी से यू.के.जी तक के बच्चों के लिए फ्रूट डे का आयोजन किया गया। इसमें बच्चों ने मौसमी फलों का लुत्फ उठाया और कविता गायन किया गया। कक्षा प्रथम से कक्षा पाँचवी तक के बच्चों के लिए Story Telling Competition *आयोजित किया गया। कक्षा छटी से आठवीं तक के बच्चों के लिए 'पर्यावरण बचाओ' 'नशा छोड़ो' विषय पर* Slogan Writing Competition *में कक्षा सातवीं के* Dev *ने सर्वश्रेष्ठ* Slogan *लिख कर प्रथम स्थान प्राप्त किया। विजेता छात्रों को स्कूल की तरफ से सर्टीफिकेट देकर सम्मानित किया गया। स्कूल के अध्यापको ने कहा कि ऐसी प्रतियोगिताओं का आयोजन बच्चों के अंदर छिपी प्रतिभा को निखारना है।*

-दयानन्द पब्लिक स्कूल लुधियाना

पृष्ठ 2 का शेष-श्रावणी पर्व क्यों...

वाणी है। जिस परमात्मा को लोगों ने व्यक्तिवाद, देवी-देवतावाद तथा स्थान विशेष की काराओं में कैद कर दिया है उसके बारे में वेद कहता है-

इशा वास्यमिदं सर्वं यत्किं च जगत्यां जगत्।

तेन त्यक्तेन भुंजीथा मा गृधः कस्य स्विद्धनम्।।

(यजु० 40-1)

मन्त्र में आदेश दिया है कि हमें उस एक परम पिता की उपासना करनी चाहिए जो सृष्टि के कण-कण में विद्यमान है। वही इस संसार का सृजन कर्त्ता और संचालक है। वही समस्त संपदाओं का स्वामी भी है इसलिए उसकी दी हुई वस्तुओं का अनासक्ति अर्थात् त्याग भाव से भोग करना अपेक्षित है क्योंकि अन्ततः यह सब कुछ उसी पिता का है।

मन्त्र में बहुत ही व्यवहारिक बात कह दी गई है। परमात्मा किसी स्थान विशेष में नहीं है बल्कि वह सर्वव्यापक है और समस्त संपदा का मालिक भी वही है। यह सब कुछ तो हमें मात्र प्रयोग करने के लिए दिया गया है ताकि हम अपने जीवन को सार्थकता प्रदान कर सकें। मन्त्र के भावों को आत्मसात् करने से जहां एक परमात्मा की अराधना का संचालन होकर मानवीय एकता को आधार मिलेगा वही दूसरी ओर आज मेरा-मेरी का जो वातावरण बना है उससे भी समाज को मुक्ति मिल सकती है। लोभ के कारण ही व्यक्ति दूसरे की वस्तु को चुराने का प्रयास करता है। इसी लोभ के कारण वह सांसारिक वस्तुओं के साथ अपनी आसक्ति भी जोड़ देता है जो व्यक्ति के दुःख का मुख्य कारण है। जब व्यक्ति मन्त्र के तथ्य को आधार मानकर अनासक्त भाव से समस्त वस्तुओं का प्रयोग करेगा तो यह अनासक्ति ही उसे आनन्द और वास्तविक सुख तक पहुंचा सकेगी। त्याग और अलोभ की वृत्ति पैदा होने पर ही व्यक्ति परोपकारी बन सकता है। जो परोपकारी होगा उसका चिन्तन वयष्टि से समष्टि की ओर उन्मुख हो जाऐगा तथा उसके हृदय में ही समूची मानवता के हित की बात आ सकेगी। फिर उसके हाथ किसी की सम्पति चुराने या उसे मारने के लिए नहीं उठेंगे बल्कि सहयोग के लिए ही उसके हाथ आगे बढ़ेंगे। इस प्रकार की समस्त ऐषणाओं से ऊपर उठकर जब वह एक परमपिता की उपासना करेगा तो उसके भीतर इस सत्य का उदय भी होगा कि परमात्मा के नाम पर मैंने जो दीवारें खड़ी कर दी थी वे वास्तव में कितनी बचकानी और अहितकारी थीं। वह इस संकीर्णता से ऊपर उठेगा कि मेरा मज़हब, मेरी जाति, मेरा सम्प्रदाय या मेरा गुरू ही सबसे बड़ा है.... इसके स्थान पर वह वास्तविक आध्यात्म की ऊंचाईयां को छूकर श्रेष्ठ मानव बनकर अपना और समूची मानवता का हित करने की दिशा में स्वाभाविक रूप से अग्रसर हो सकेगा। वह परमात्मा ही वास्तव में सृष्टि का सृजन करने वाला और मालिक है वेद में अन्य अनेक ऐसे बहुत से मन्त्र है यथा... **भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्।।** (यजु० 13-4) अर्थात् समस्त प्राणीमात्र का पति (स्वामी) वह परमपिता परमात्मा ही है और वह अनेक नहीं बल्कि एक है और एक ही रहेगा..... वेद की यह शिक्षा हमें एकता के सूत्र में बान्ध सकती है और भगवानों के नाम पर बंटने की कुप्रवृति से मुक्ति दिला सकती है। भगवानों का भगवान और गुरूओं का गुरू वह परमात्मा ही है। एक वहीं उपास्य है और उसी की उपासना करनी चाहिए। लोक-परलोक की उन्नति का आधार यही है..... व्यक्ति, परिवार, समाज और राष्ट्र की सुख-शान्ति एवं समृद्धि का यही मूल मन्त्र है। हम सभी एक ही जाति अर्थात मनुष्य जाति के हैं और वही परमात्मा हमारा पिता है।

हम कैसे पुत्र हैं जो पिता को भी भूलते जा रहे हैं। वेद में बहुत ही सुन्दर शब्दों में कहा गया है- **त्वं हि नः पिता वसो त्वं माता शतक्रतो बभूविथ। अधा ते सुम्नमीमहे।।** (साम० 4-2-13-2) **स नः पितेव सूनवेऽग्ने सूपायनो भव। सचस्वा नः स्वस्तये।।** (ऋ० 1-1-9) अर्थात् वह परमात्मा ही हमारा माता-पिता और सुख शान्ति तथा प्रसन्नता देने वाला है। वह हमारा ऐसा पिता है जिसकी पावन गोद हमें सहजता से उपलब्ध है। वह निरन्तर अपने स्नेह की हम पर वर्षा कर रहा है.... मात्र उसे पहचानकर उसकी गोद में बैठ जाने की जरूरत है मगर पता नहीं हमारे भीतर कब विवेक पैदा होगा तथा हम भौतिकता वाद की इस अन्धी दौड़ से मुक्त होकर उस आनन्दमयी गोद में बैठकर चिर तृप्ति को प्राप्त करेंगे। ऐसा होने से ही व्यक्ति के भीतर **वसुधैव कुटुम्बकम्** की भावना पैदा हो सकेगी तथा मानववाद की स्थापना होकर प्रेम और सौहार्द की पवित्र गंगा बहेगी। जिस दिन संसार के सभी व्यक्ति अपने उस एक असली बाप को पहचान जाऐंगे उसी दिन व्यक्ति मजहब वाद से मुक्त होकर एक वैदिक धर्म की शरण में आकर आनन्दित हो सकेगा।

हमारा प्रत्येक पर्व एक दिव्य सन्देश देने वाला होता है तथा हमें वह सन्देश आत्मसात् करने की जरूरत है। अतः श्रावणी पर्व की सार्थकता इसी में है कि प्रत्येक व्यक्ति अपने आप को सत्य के पक्ष में करके आध्यात्मिकता की ऊंचाईयों को छूकर अपना और समूचे विश्व के चतुर्दिक विकास का मार्ग प्रशस्त करे। हम वेद के आधार पर ही आज की दिशाहीन मानवता को कुछ स्वर्णिम आयामों तक पहुंचाने की दिशा में कुछ सार्थक कार्य करके पुण्य के भागी बन सकते हैं।

शोक प्रस्ताव

आर्य समाज मंदिर सरहिन्द के सभी सभासद श्री रमेश कुमार सूद पूर्व प्रधान आर्य समाज मंदिर, महर्षि दयानन्द हाई स्कूल के आकस्मिक निधन पर गहरा दुख प्रकट करते हैं और असीम दुख की इस घडी में परिवार के साथ खड़े हैं। हम सब परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वह दिवंगत आत्मा को अपने चरणों में निवास दे एवं परिवार को इस असहनीय दुख को सहने की शक्ति प्रदान करे।

श्री रमेश कुमार सूद गुरुकुल के स्नातक थे व आर्य समाज के अनन्य भक्त थे। पूरी आयु उन्होंने आर्य समाज की सेवा की। उनके कार्यकाल में आर्य समाज मंदिर सरहिन्द ने बहुत उन्नति की। यज्ञशाला के नव निर्माण व दयानन्द हाई स्कूल का भवन बनाने में उनका महत्वपूर्ण योगदान रहा है। प्रत्येक पर्व व उत्सव पर बढ़ चढ़ कर भाग लेते थे। उनके चले जाने से आर्य समाज सरहिन्द को एक अपूरणीय क्षति हुई है।

शोक संवेदना

श्रीमती शिमला रानी धर्मपत्नी श्री वेद प्रकाश जी रामां का गत दिनों देहावासन हो गया। श्रीमती शिमला रानी जी पिछले कुछ दिनों से रूग्ण चल रही थी। श्रीमती शिमला रानी जी बहुत ही यज्ञ प्रिय थी और प्रतिदिन अपने घर में हवन यज्ञ किया करती थीं। उनके चले जाने से आर्य समाज को भारी क्षति हुई है।

श्रीकृष्ण जन्म उत्सव

स्त्री आर्य समाज स्वामी दयानन्द बाजार (दाल बाजार)लुधियाना 18 अगस्त 2017 को श्री कृष्ण जन्म उत्सव दोपहर बाद 3.00 बजे से साढ़े पांच बजे तक बड़ी धूमधाम से मनाया जा रहा है। इस अवसर पर वैदिक प्रवक्ता श्री कृष्ण के जन्म पर प्रकाश डालेंगे और आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रसिद्ध भजन गायक श्री जगत वर्मा जी के मधुर भजन होंगे। सभी धर्म प्रेमी सज्जनों से निवेदन है कि इस अवसर पर पधार कर धर्म लाभ उठावें। ***-माता जनकरानी आर्या***

रजि. नं. पी.बी./जे.एल-011/2015-17 RNI No. 26281/74

आर्य समाज गांधी नगर-1 जालन्धर में हवन यज्ञ का आयोजन

आर्य समाज वेद मंदिर गांधी नगर-1 जालन्धर में साप्ताहिक यज्ञ में आहुतियां प्रदान करते हुये आर्य जन।

आर्य समाज मंदिर गांधी नगर-1 जालन्धर में दिनांक 23 अगस्त 2017 दिन रविवार को हवन यज्ञ का आयोजन किया गया जिसमें डा. रजनीश के पिता श्री जोगिन्द्र पाल अपनी धर्मपत्नी श्रीमती कृष्णा कुमारी के साथ मुख्य यजमान बने। पंडित अनिल कुमार जी ने हवन यज्ञ करवाया। यज्ञ में अशोक कुमार सपत्नीक यज्ञमान बने। सभी ने यज्ञ में बड़ी श्रद्धापूर्वक आहुतियां डाली। हवन के पश्चात श्री राजपाल एवं पंडित अनिल जी ने श्री सत्यपाल जी पथिक के मधुर भजन सुनाएं जिससे आर्य जनता मंत्रमुग्ध हो गई।

आर्य समाज के प्रधान श्री राजपाल जी ने यज्ञ पर प्रकाश डालते हुये अपने सम्बोधन में कहा कि यज्ञ अग्नि, समिधा तथा आज्यपात्रों द्वारा होता है। यजमान जहां अग्नि के माध्यम से देव का, घृत के माध्यम से दान का और समिधा के माध्यम से संगतिकरण का अभिनय होते देखता है, वहां घृत के माध्यम से दान का, अग्नि के माध्यम से आदान का और समिधा के माध्यम से अदन का अभिनय होते भी देखता है। यज्ञ प्रक्रिया के इन तीनों तत्वों को एकत्रित करके हमारे मनीषियों ने अग्निहोत्र नाम दे दिया था। कोई भी व्यक्ति इस महायज्ञ में इन तीनों पदार्थों के द्वारा तीन तत्वों को अभिनीत देख कर किसी भी यज्ञ का अभिनेता बन सकता है।

किसी यज्ञ में अग्निरूप अभिनेता, किसी में समिधारूप अभिनेता तो किसी में हविरूप अभिनेता। हमने अपने जीवन को अभिनीय बनाना है इसलिये नित्य अग्निहोत्र में इनका प्रत्यक्ष होना आवश्यक है। यज्ञ वेदि पर और चाहे कितने ही पात्र क्यों न हों अग्नि, समिधा, आज्य की उपेक्षा नहीं की जा सकती। इन तीनों का होना आवश्यक है।

उन्होंने कहा कि अग्निहोत्र में प्रथम तत्व अग्नि है, दूसरा तत्व आज्य तथा तीसरा तत्व समित है। उद्देश्य यज्ञ है। हमने यह दिखाने का प्रत्यन किया है कि अग्नि देव का, समिधा संगतिकरण का, तथा आज्य दान का प्रतीक है।

इसके बाद यजमानों को आशीर्वाद दिया गया। इस अवसर पर आर्य समाज के सभी सदस्य उपस्थित थे। इनमें श्री अशोक कुमार, श्री सतपाल, श्रीमती सुदेश कुमारी, श्री तिलकराज जी, श्रीमती लीला देवी जी, विजय कुमार जी, श्रीमती उषा रानी, श्रीमती संतोष कुमारी, श्री कस्तूरी लाल जी, श्री ईश्वर दास सपरा, दीपू, श्री मोहिन्द्र पाल, अरविन्द कुमार, महंगा राम इत्यादि विशेष रूप से पधारे थे और इन सभी ने बड़े ही श्रद्धापूर्वक आहुतियां प्रदान की। इस अवसर पर श्री जोगिन्द्र पाल जी ने अपने पिता जी की याद में आर्य समाज को 14 पंखे दान दिये। शान्ति पाठ के पश्चात प्रसाद वितरण किया गया।

अनिल कुमार मंत्री
आर्य समाज

गुरुकुल का आयुर्वेद महान
घर-घर में मिले रोगों से निदान

गुरुकुल च्यवनप्राश
सभी के लिए स्वादिष्ट, रुचिकर, पौष्टिक रसायन।

गुरुकुल पायोकिल
पायोरिया की आयुर्वेदिक औषधि
दांतों में खून रोके, मुंह की दुर्गन्ध दूर करे,
मसूड़ों के रोग, ढीले दांत ठीक करे।

गुरुकुल शतशिलाजीत सूर्यतापी
पुष्टीदायक, बलवर्धक
शरीर में नया खून और उत्साह का अनुभव

गुरुकुल ब्राह्मी रसायन
बुद्धिवर्धक, स्फूर्तिदायक, दिमागी कमजोरी दूर करे।

गुरुकुल मधुमेह नाशिनी गुटिका
मधुमेह एवं प्रत्येक प्रकार के प्रमेह में लाभदायक

गुरुकुल मधु
गुणवत्ता एवं ताजगी के लिए

गुरुकुल चाय
खाँसी, जुकाम, इन्फ्लूएंजा व थकान में अत्यंत उपयोगी।

अन्य प्रमुख उत्पाद
गुरुकुल द्राक्षारिष्ठ
गुरुकुल रक्तशोधक
गुरुकुल अश्वगंधारिष्ट

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी, हरिद्वार डाकघर : गुरुकुल कांगड़ी-249404, जिला-हरिद्वार (उत्तरांचल) फोन : 0134-416073

शाखा कार्यालय : 63, गली राजा केदार नाथ, चावड़ी बाज़ार, दिल्ली-6, फोन : 23261871

श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा गायत्री प्रिंटिंग प्रैस, मण्डी रोड जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। E-mail: apspunjab2010@gmail.com, www.aryapratinidhisabha.org
आर्य मर्यादा में प्रकाशित सारी लेखन सामग्री से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्याय क्षेत्र जालन्धर होगा।